उजाले की ओर

सुमा टी आर
मो. 8088545787

कर्नाटक राज्य के सवदत्ति शहर की रौनक देखते ही बनती थी। हजारों की तादाद में लोग यानी भक्तगण येलम्मा देवी (रेणुका देवी) के मंदिर में देवदासी प्रथा के आचरण को देखने के लिए एकत्रित हुए थे। सभी की आंखों में चमक थी। इस तरह छोटी-छोटी बच्चियों को देवदासी यानी देवी-देवताओं की दासी बनाया जा रहा था। आज एक छोटे से गांव का रमेश अपनी पत्नी के साथ अपनी इकलौती बेटी कमली को लेकर आया था। वह भी अपनी बेटी को देवदासी बनाने जा रहा था। उसके चेहरे पर खुशी थी कि उसने येलम्मा देवी से किए वादे को पूरा करने जा रहा है।

पत्नी ने पति को देखकर कहा- 'आज आप बहुत खुश दिखाई दे रहे है?'

पति ने खुशी से कहा, 'लक्ष्मी सचमुच आज मैं बहुत खुश हूं, तुम तो जानती हो कमली जब छोटी थी तो उसे एक दिन ऐसा बुखार चढ़ा कि उतरने का नाम नहीं ले रहा था। डॉक्टर ने भी इंकार कर दिया था। तब मैंने येलम्मा देवी से हाथ जोड़कर प्रार्थना की थी कि हे देवी अगर मेरी बेटी को प्राणदान दोगी, तो मैं उसे आपकी दासी बनाऊंगा। आज वह खुशी की घड़ी आ गई है।'

'पत्नी बोली, 'सच मैं भी बहुत खुश हूँ कि मेरी बेटी देवदासी बनने जा रही है।'

माता-पिता की खुशी देख कमली भी खुश हो रही थी। उसे लग रहा था कि देवदासी बनने के बाद उसके पास बहुत पैसे आएंगे। खाने के लिए स्वादिष्ट भोजन मिलेगा। कमली अभी बारह साल की बच्ची थी, उसे इस बात का अंदाजा नहीं था कि जिस जीवन को वह अपनाने जा रही है, वह एक मृगतृष्णा जैसा था। देवदासी बनने का सपना देखना, अलग बात थी, देवदासी बनकर जीना, किसी नरक से कम नहीं था। धीरे-धीरे समय गुजरने के साथ देवदासी जीवन की हकीकत सामने आने लगती है।

देवदासी बनकर कमली आज बहुत खुश थी। इतनी सारी भीड़ के बीच उसके शरीर को नीम के पत्तों से ढक कर नहलाया गया। देवी से उसकी शादी भी कर दी गई। अब वह दुल्हन जैसी लगने लगी थी। उसी के गाँव के

जमींदार का बेटा कमली के सौंदर्य को देखकर दिल हार गया था, उसे मालूम था कमली दलित कन्या के साथ-साथ देवदासी भी है। जब कमली देवदासी बन गई तो जमींदार के बेटे शिवशंकर ने उसे अपनी रखैल बनाकर रखा। यह समाज की विडम्बना है कि देवदासी के नाम पर उसका यौन शोषण ही होता है यह बात उसे कई सालों के बाद पता चली। शिवशंकर के साथ उसने पत्नी जैसा रिश्ता निभाया और आगे चलकर उसकी एक बेटी भी हुई जिसका नाम पवित्रा रखा गया। शिवशंकर उसे उपयोग कर रहा था, बेटी से उसको कोई लगाव नहीं था।

एक दिन कमली ने शिवशंकर से कहा, 'आपको पता है, आपकी बेटी अब बड़ी हो गई है। उसे स्कूल में दाखिला दिलाना है।'

शिवशंकर, 'अच्छी बात है तुम जाकर सरकारी स्कूल में दाखिला दिला दो'

कमली, 'वह तो ठीक है पर आपको जाना चाहिए फॉर्म भरने के लिए आपकी जरूरत है।'

शिवशंकर, 'मुझे बहुत काम हैं, तुम्हीं जाकर दाखिला करा दो।' यह कहकर वह आँखें चुराने लगा क्योंकि अब कमली से उसका दिल भर गया था और घर में उसके रिश्ते की बात एक बड़े जमींदार की बेटी से चल रही थी। इसलिए कमली से वह पीछा छुड़ाना चाहता था। दिन गुजरते गए पर शिवशंकर ने दुबारा मुड़कर नहीं देखा।

कमली आँखों में उम्मीद की किरण जलाए बैठी थी कि वह जरूर आएगा। लेकिन शिवशंकर ने कभी उसे अपना माना ही नहीं था वह तो केवल कमली को अपनी हवस को मिटाने का एक जरिया समझता था। वह अपने बाल-बच्चों के साथ हंसी खुशी जिंदगी बिता रहा था। कमली का घर उसके पैसों से चलता था अब वह आता नहीं, न ही पैसों से मदद करता। कमली के माँ-बाप बूढ़े हो चुके थे, वे खेतों में काम भी नहीं कर सकते थे। कमली की अपनी बेटी भी थी। इन लोगों को वह भूखा-प्यासा तड़पते नहीं देख सकती थी। हिम्मत करके वह जमींदार की कोठरी पर गई ताकि शिवशंकर का दिल पिघले वह दुबारा घर आ जाए।

कमली बड़ी उम्मीद लिए जमींदार के कोठरी के पास खड़ी थी, शिवशंकर ने पहले ही उसे देख लिया था और उसने नौकरों से कहा, 'देवदासी कमली को किसी भी हालत में अन्दर मत आने देना, उसके आने से हमारी कोठरी अपवित्र हो जाएगी।'

नौकर, 'हम उसे आने नहीं देंगे, अगर आई तो उसे धक्का मारकर निकाल देंगे।'

कमली बार-बार मिन्नतें करने लगी कि एक बार मुझे मिलने दो। लेकिन किसी ने उसे अंदर जाने नहीं दिया। शोर-शराबा सुनकर शिवशंकर की पत्नी सपना बाहर आयी और कमली को देखकर बोली, 'कौन हो तुम जमींदार से क्यों मिलना चाहती हो?'

कमली, 'मैं देवदासी हूँ, जमींदार से...'

तभी जमींदार बाहर आये और सपना की ओर मुख करके बोले, 'अरे सपना यह देवदासी है, भीख माँगने आयी है बेचारी, कुछ पैसे हैं तो देकर दफा कर दो।'

कमली ने कुछ नहीं कहा और दिल पर पत्थर रखकर वापस आ गई। घर चलाने के लिए उसे कुछ-न-कुछ काम तो करना था। उसने अन्य देवदासी से सुना था कि मुंबई में अच्छा काम मिलता है। अंत में अपनी बेटी को माता-पिता के पास छोड़कर कमली मुंबई चली गई। मुंबई में काम यानी वेश्यावृत्ति में लग गई। अन्य औरतों को काम पर जाते देखती तो सोचती काश मेरे माता पिता ने मुझे देवदासी न बनाकर पढ़ाया होता तो आज मैं यहाँ नहीं होती लेकिन मैं अपनी बेटी को जरूर पढ़ाऊंगी।

कमली को मुंबई में काम करते पंद्रह साल हो गए थे। उसने अपनी जिंदगी दाँव पर लगाकर बेटी को कर्नाटक विश्वविद्यालय धारवाड़ में दाखिला दिला दिया। बेटी को हमेशा कहती, 'अच्छे से पढ़ोगी तो राजा जैसी जिंदगी जियोगी।

पवित्रा, 'माँ मैं भी आप की तरह मुंबई आकर काम करूंगी।'

बेटी के मुँह से यह शब्द सुनकर उसका रोम-रोम काँप उठा और बेटी को गले लगाते हुए कहा, 'फिर कभी ऐसी बात मत कहना, तुम्हें पढ़ना और बहुत अच्छी जिंदगी जीना है।' यह कहकर बेटी को गले लगाकर रो पड़ी। पवित्रा माँ के इस बर्ताव को समझ नहीं पायी पर उसने पक्का मन बना लिया वह खूब पढ़ेगी और माँ का सपना पूरा करेगी।

पवित्रा ने एलएलबी की पढ़ाई पूरी की, इसी बीच उसकी मुलाकात मोहन से हुई, मोहन उससे एक साल छोटा था पर वह पवित्रा की सादगी पर मर मिटा था। दोनों एक ही गाँव के थे इसलिए दोनों में नजदीकियां बढ़ने लगी

और एक दूसरे के प्यार में बंध गए। इसी बीच पवित्रा को नाना का टेलीग्राम आया कि 'तुम्हारी माँ बहुत बीमार है और तुम जल्दी चली आओ।' टेलीग्राम देख पवित्रा घबरा गई और शाम की बस से वापस गाँव लौट आई। गाँव आकर देखा माँ बहुत कमजोर हो गई थी और खाँसी रुकने का नाम नहीं ले रही थी। माँ को इस हालत में देख उसे बहुत दु:ख हुआ और वह दिन-रात माँ की सेवा करने लगी।

गाँव आने के बाद उसे पता चला उसकी जाति क्या है, उसकी माँ कौन-सा काम करती है इस वजह से माँ को एड्स जैसी जानलेवा बीमारी हो गई। उसकी नजरों में माँ की प्रति आदर और श्रद्धा ओर ज्यादा बढ़ गई। एक दिन जब वह अपनी माँ को दिखाने सरकारी अस्पताल जा रही थी तो एक अधेड़ उम्र का व्यक्ति आकर उसकी माँ से बातें करने लगा। तुम कब आई मुंबई से, कैसी हो? क्या यह तुम्हारी बेटी है?'

कमली, 'हाँ यह हमारी बेटी है।' उसकी आँखों में खुशी की आंसू निकल आए क्योंकि इतने दिनों बाद शिवशंकर उसका हालचाल पूछ रहा था। उसने अपनी बेटी से पाँव छूने के लिए कहा। कमली की ओर देखकर शिवशंकर ने कहा, 'कमली तुम्हारी बेटी तो बिल्कुल तुम पर गई है, जवानी के दिनों में तुम भी ऐसी ही दिखाई देती थी। खैर छोड़ो-अब कैसी हो? दवा दारू की जरूरत हो तो मुझसे मांग लेना।' इतना कहकर उसने कमली के हाथों में कुछ पैसे थमा दिए। पवित्रा को इतना तो पता चला कि इस व्यक्ति और माँ के बीच कोई संबंध तो है। घर आने पर माँ ने विस्तार से बताया तो पवित्रा ने भी अनमने मन से उसे पिता स्वीकार कर लिया। वह व्यक्ति हर रात चोरी छिपे दलितों की गली में कमली से मिलने आ जाता। उसका चोरी छुपे यूँ आना उसे अखरता था पर माँ की खुशी देखकर वह चुप हो जाती।

इधर मोहन पवित्रा से मिलने बेताब था और एक दिन वह भी रात के अंधेरे में पवित्रा से मिलता है। कई दिनों के बाद दोनों मिल रहे थे और शिकवे- शिकायत कर रहे थे। इस तरह दोनों का रात के अंधेरे में मिलना जारी था। एक ऐसी ही रात थी दोनों बातें कर रहे थे तभी माँ के कमरे से चीखने-चिल्लाने की आवाज आ रही थी।

कमली, 'आपने यह कैसे सोचा वो आपकी बेटी है? समाज में आपने उसको बेटी नहीं माना पर बायोलॉजिकली वह आपकी बेटी है। कैसे उसे अपनी रखैल बना सकते हो?'

शिवशंकर भारी और क्रोधित आवाज में-'किसकी बेटी, कैसी बेटी, वह तो एक देवदासी की बेटी है। देवदासी और उसकी बेटी को सभी उपयोग कर सकते है। वैसे भी तुम्हारे घर को चलाने के लिए तुम्हारी बेटी एक अच्छा जरिया बन सकती है।' कमली की आँखों के आगे अंधेरा छा गया और हिम्मत जुटाकर बोली, 'मेरे जीते जी यह नहीं हो सकता।' थोड़ी देर में चीखना-चिल्लाना कम हो गया तो पवित्रा ने धीरे से कहा, 'मोहन तुम चले जाओ फिर मिलते हैं।' मोहन चला तो गया पर उस व्यक्ति की भारी भरकम आवाज उसको बेचैन करती रही।

सुबह का सूरज एक मनहूस खबर लेकर आया देवदासी कमला नहीं रही, कल रात ही उसकी मृत्यु हो गई। मोहन का दिल टूट-सा गया उसको पवित्रा की चिंता सता रही थी। वह उस मौके के इंतजार में था कि पवित्रा की माँ से उसकी बेटी का रिश्ता मांगे लेकिन अचानक ये सब इतनी जल्दी हो गया वह समझ नहीं पा रहा था आगे क्या करे। दूसरी ओर उस भारी भरकम व्यक्ति की आवाज भी कानों में गूँज रही थी। उसने इतना घटिया आदमी अपनी जिंदगी में नहीं देखा था। अपनी सोच से जल्दी बाहर आया और सोचा चलो पवित्रा की माता के अन्तिम क्रिया में जाते है।

कमली को दुल्हन की तरह सजाया गया था क्योंकि वह देवदासी थी लेकिन उसने गृहस्थ जीवन भी बिताया था इसलिए परंपरा थी कि उसे दुल्हन के जोड़े में विदा करें। दूल्हा के रूप वहीं अधेड़ उम्र का व्यक्ति बैठा था। पवित्रा का तन-मन जल रहा था, पर समाज के रीति रिवाजों के सामने उसने चुप्पी साध ली। इधर मोहन की नजर जैसे ही उस अधेड़ व्यक्ति पर पड़ी उसका सारा वजूद ही कांप गया क्योंकि वह अधेड़ व्यक्ति और कोई नहीं उसका जन्मदाता यानी पिता थे। मोहन को सारी दुनिया घूमती नजर आयी वह अपने घर चला आया। रात-दिन उसे यही बात सता रही थी कि उसके पिता इतने बुरे आदमी है। समाज के सामने अच्छे बनने का ढोंग करते है और अंदर खूंखार भेड़िया है जो अपनी ही बच्ची को अपने हवस का शिकार बनाना चाहता है। वह पवित्रा को मुँह दिखाने काबिल नहीं रहा और इसी द्वंद्व में उसने अपनी जिंदगी खत्म कर ली। मोहन का मरना पवित्रा के लिए दूसरा

सदमा था और वह पूरी तरह टूट गई। उसे पहली बार पंजाबी कवि 'पाश' की कविता याद आयी, 'कितना बुरा होता है आदमी के सपनों का मर जाना।'

जमींदार शिवशंकर अपने इकलौते बेटे को खोकर पागल-सा हो गया। मोहन ने मरने से पहले पिता को पत्र लिखा था, 'आपकी वजह से मैं इस दुनिया को छोड़ रहा हूँ। अगर आप पश्चाताप करना चाहते है तो पवित्रा को बेटी के रूप में अपनाओ।' पवित्रा को जब इसकी जानकारी मिली तो उसे समाज के इन रीति रिवाजों और जमींदार की काली करतूत से नफरत हो गई। जमींदार ने माफी माँगते हुए उसे बेटी का दर्जा देना चाहा पर पवित्रा ने साफ-साफ इनकार कर दिया।

पवित्रा एलएलबी की विद्यार्थी थी उसने सोच समझकर डॉ. बाबा साहेब आंबेडकर के मार्ग पर चलने का निर्णय लिया। आज वह कितनी बेसहारा लड़कियों का सहारा बनकर छात्रावास चला रही है। अब उसके पास एक ही मकसद है कोई भी सामाजिक रूढ़ियों का शिकार न हो। दिन भर की दौड़-धूप के बाद वह थक-सी जाती है और शाम के समय बौद्ध मठ से आनेवाले यह शब्द उसे सुकून देते हैं।

बुद्धम् शरणम् गच्छामि।
धम्म् शरणम् गच्छामि।
संघम् शरणम् गच्छामि।❑

पृष्ठ सं. 27 का शेष भाग

चला कि तुम भी बिलासपुर चली गयी हो, लेकिन उसके बाद कहाँ हो, यह नहीं पता चला। बीमारी की अवस्था में तुमसे मिलने की अंतिम इच्छा लिए माँ भी चल बसीं। पिता जी ने तुम्हारे नाम कुछ फिक्स्ड डिपॉजिट किए थे जो मेरे पास हैं। कुछ महीने पहले अखबार में तुम्हें राष्ट्रपति अवार्ड मिलने की सूचना पढ़ी। साथ में तुम्हारे जीवन से जुड़ी वह सभी बातें, जिसे मां-पिताजी कभी-कभी बताया करते थे। तुम्हारी पथ-प्रदर्शक में कमला दी का नाम देख कर यह जानकारी पुख्ता हो गई कि तुम ही मेरी दीदी हो। तुम्हारी तस्वीर देखकर मेरी पत्नी ने कहा, 'इनका चेहरा आपसे मिलता है।' अब शक की कोई गुंजाइश ही नहीं थी। तुम मनोहरपुर आने की सूचना दो, मैं भी वहीं आता हूं।

तुम्हारा भाई
राजेश

पापाजी ने जीते जी अगर थोड़ा भी इस प्रेम को दिखाया होता तो शायद सारी उपेक्षा मैं भूल जाती और छुट्टियों में भी घर जाने की ललक बनी रहती, लेकिन ऐसा नहीं हुआ और सम्भवत: मेरी लम्बी अनुपस्थितियों ने उन्हें विचलित कर दिया। गेस्ट हाउस के कमरे में चाय पीते-पीते पुन: मुझे अपने उस परिवार की याद आ गयी। तभी सेवक ने सूचना दी कि कोई मुझसे मिलने आया है। बैठक में देखा, मेरा भाई राजेश दोनों बाहें फैलाए मेरी ओर आ रहा था। खून के रिश्ते की गरमाहट क्या होती है, आज महसूस किया। राजेश ने बहुत देर तक सबके बारे में बताया, बहनों की शादी-ब्याह, उनका पता आदि।

पापा द्वारा मेरे लिए रखे फिक्स्ड डिपॉजिट का चेक मुझे सौंपते हुए राजेश ने कहा, 'दीदी, माँ की बहुत इच्छा थी कि तुम घर वापस आ जाती। अब चलो, मेरे बच्चे भी तुम्हारा साथ चाहते हैं।' मैंने उसके आँसू पोंछते हुए कहा, 'मेरा परिवार बहुत बृहद है, भाई। हजारों विद्यार्थी हैं, अनेक पशु-पक्षी। स्वावलम्बन की राह पर चलने वाली अनेक उपेक्षित बहनों की मैं आशा हूँ। मेरे आशियाने का नाम भी गुलमोहर है, जिसकी छाया में हर थका-माँदा प्राणी आराम पाता है। तुम जाओ और अपना खयाल रखना। हाँ, तुम्हें कभी किसी चीज की जरूरत हो तो बेहिचक मेरे पास आ जाना।' राजेश के जाने के बाद मैंने आईने के सामने खुद को देखा। धूसर रंग, बालों की चाँदी, आँखों के नीचे की कालिमा। बहुत कुछ बदल गया था। जो नहीं बदला था, वह मेरा पोलियो ग्रस्त हाथ और टेढ़ी अंगुलियाँ। मेरी कमजोरी ही मेरी ताकत बन गई थी। उसके एवज में मिला देशवासियों का प्यार मेरी कमाई थी। जीवन की आपाधापी में यादें विस्मृत होती गयीं लेकिन माँ का वह अमर वाक्य अब भी जहन में था, 'जा बेटी, अपने को इतना मजबूत कर ले कि किसी के सहारे की जरूरत न पड़े।' पापा के चेक को दूसरे दिन ही भुनाने के लिए बैंक भेज दिया। मेरे नाम के वो सारे रुपए कॉलेज की दान-पेटी में डालते हुए उन्हें कृतज्ञतापूर्ण प्रणाम किया।❑

तथागत बुद्ध कहते हैं

एक पल, एक दिन को बदल सकता है, एक दिन एक जीवन को बदल सकता है, एक जीवन इस दुनिया को बदल सकता है।